[2010] 8 एससीआर, 779

नरिंदर कुमार

बनाम

जम्मू और कश्मीर राज्य

(आपराधिक अपील संख्या 2093/2008)

21 जुलाई, 2010

[माननीय न्यायमूर्ति आफताब आलम और माननीय न्यायमूर्ति टीएस ठाकुर]

रणबीर दंड संहिता -धारा *302 -हत्या की कोटि का सदोष मानव वध - आरोपी-अपीलकर्ता और पीड़ित के बीच तीखे शब्दों और गाली-गलौज का आदान-प्रदान जिसके कारण बाद वाले की गोली लगने से मौत - चार चश्मदीद गवाहों की गवाही - अपीलकर्ता की दोषसिद्धि - का औचित्य - अभिनिर्धारित : तथ्यों पर, उचित - सभी चश्मदीद गवाहों द्वारा दिया गया बयान पीड़ित की मृत्यु की घटना की उत्पत्ति के संबंध में सुसंगत था - गवाहों के प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य की भी चिकित्सा साक्ष्य द्वारा पूरी तरह से पुष्टि की गई थी - यह सुझाव देने के लिए कुछ भी नहीं था कि गवाहों के पास वास्तविक अपराधी को जांचने और अपीलकर्ता को झूठा फंसाने का कोई कारण था, नीचे की अदालतें उचित थीं उनके संस्करण को स्वीकार करने में - निजी बचाव की दलील अपीलकर्ता* द्वारा *उठाई गई टिकाऊ नहीं* है *- दोषसिद्धि बरकरार रखी गई है।*

साक्ष्य - हितबद्ध गवाह की गवाही -की सराहना।

प्राथमिकी - क्षेत्राधिकार मजिस्ट्रेट को प्राथमिकी की एक प्रति भेजने में बिलम्ब अभिनिर्धारित : अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं है - देरी का प्रभाव प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के संदर्भ में निर्धारित किया जाना चाहिए।

अभियोजन के अनुसार, जब एक "भांगड़ा पार्टी" 'बैसाखी' मेले से लौट रही थी, एक मौज-मस्ती करने वाले (प्रथम सूचक के बड़े भाई) ने पैर रौंद दिया, आरोपी-अपीलकर्ता का, जिस पर दोनों के बीच तीखे शब्दों और गाली-गलौज का आदान-प्रदान हुआ।

अपीलकर्ता गुस्से में मौके से चला गया, लेकिन थोड़ी देर बाद अपने हाथ में 12 बोर की बंदूक लेकर लौटा, जिसके बाद उसने प्रथम सूचक के बड़े भाई पर करीब से गोली चलाई और हथियार लेकर मौके से भाग गया। पीड़ित को अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। विचारण न्यायालय ने अपीलकर्ता को धारा 302 आरपीसी के तहत दोषी ठहराया और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। उच्च न्यायालय ने अपीलकर्ता की दोषसिद्धि की पुष्टि की। इस न्यायालय के समक्ष अपीलकर्ता ने तर्क दिया कि वह झूठा फंसाया गया था और अभियोजन पक्ष की कहानी में गंभीर खामियां थीं जो उसे संदेह के लाभ का हकदार बनाती थीं।

अपील को खारिज करते हुए , न्यायालय

अभिनिर्धारित:

1.नीचे की अदालतों द्वारा पारित निर्णय और आदेश के साथ हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं है । विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने अपने-अपने फैसलों में अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया है, और सही ढंग से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अभियोजन पक्ष अपीलकर्ता के खिलाफ हत्या की कोटि का सदोष मानव वध के आरोप को संदेह की छाया से परे साबित करने में सफल रहा है। [पैरा 6] [787-ए-सी]

2.1. अभियोजन पक्ष का मामला विचारण में परीक्षित पांच में से चार चश्मदीद गवाहों की गवाही के आधार पर साबित होता है । पहले सूचक का बयान (मृतक का छोटा भाई) जो विचारण न्यायालय के समक्ष दर्ज किए गए उसमे घटना की उत्पत्ति का एक ग्राफिक विवरण दिया गया जो पीड़ित की मृत्यु का कारण बनती है। विभिन्न पहलुओं पर व्यापक जिरह के बावजूद, बचाव पक्ष द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं निकाला गया, जो संभवतः उनकी गवाही को चकनाचूर कर सके। गवाह अपने कथन पर अड़ा रहा कि यह अपीलकर्ता था जिसने मृतक पर गोली चलाई जिससे उसकी मौत हो गई।

[पैरा 6 और 7] [787-डी-ई; 788-डी-ई]

2.2 दूसरे गवाह पीडब्लू 4 द्वारा दिया गया बयान भी इसी आशय का है।इस गवाह की जिरह

भी व्यापक रही है लेकिन बचाव पक्ष द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं निकाला गया है जो इस गवाह की विश्वसनीयता या अभियोजन पक्ष के संस्करण की सत्यता को प्रभावित कर सकता है ।
[पैरा 8] [788-सी-डी]

2.3 अभियोजन द्वारा परीक्षित तीसरा चश्मदीद गवाह मृतक या उसके परिवार से किसी भी तरह से संबंधित नहीं है और, इसलिए, किसी भी तरह से पक्षपातपूर्ण के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता है। इस गवाह ने भी एक समान विवरण दिया है जैसा कि पहले सूचक द्वारा उस घटना की उत्पत्ति के बारे में दिया गया था जिसके कारण मृतक की मृत्यु हो गई थी।अन्य दो चस्मदीद गवाहों की तरह, व्यापक रहा है लेकिन वहाँ बचाव पक्ष के लिए उसकी विश्वसनीयता या उसके संस्करण की सत्यता के संबंध में किसी भी आलोचना के योग्य कुछ भी नहीं है। गवाह इस बात पर दृढ़ था कि अपीलकर्ता ने ही मृतक पर गोली चलाई थी। [पैरा 9] [789-0-ई]

2.4 उसी प्रभाव का चौथे गवाह का बयान है जिसने गवाही दी कि घटना के परिणामस्वरूप, मृतक को अपीलकर्ता के हाथ से बन्दूक की गोली लगने से चोट लगी थी। जिरह में उनके कथन को अमान्य करने के लिए कुछ भी नहीं है। [पैरा 10] [789-ई]

2.5 इन सभी चश्मदीद गवाहों द्वारा दिए गए सुसंगत विवरण के आलोक में, नीचे की दोनों अदालतों ने यह मानने में उचित ठहराया कि अभियोजन पक्ष किसी भी संदेह की छाया से परे आरोपी-अपीलकर्ता के अपराध को साबित किया विशेषकर तब जब अपीलकर्ता एवं गवाहों या उनके परिवार के बीच कोई पूर्व दुश्मनी नहीं थी यहां तक कि झूठेआरोप की संभावना का सुझाव देने के लिए। [पैरा 11] [789-एफ]

3.1. वर्तमान मामले में, गवाहों के प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य की भी चिकित्सा साक्ष्य द्वारा पूरी तरह से पुष्टि की गई थी। वैज्ञानिक सहायक के बयान ने साबित कर दिया कि जांच के लिए फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में भेजी गई 12 बोर एसबीबीएल बंदूक सामान्य थी। काम करने की स्थिति में और प्रयोगशाला में इसकी प्राप्ति से पहले इससे गोली चली थी, और वह कारतूस खोल प्रश्नगत बंदूक से चलाई गई थी । गवाह आगे बयान दिया कि मृतक के कपड़ों पर मौजूद संदिग्ध छेद बंदूक की गोली के छेद थे। अभियोजन पक्ष ने साक्ष्य दिया कि प्रसंगत हथियार अपीलकर्ता के पिता के नाम लाइसेंसी था।

[पैरा 12, 13) [789-जी-एच; 790-डी-ई]

3.2. इसके अलावा, बचाव पक्ष ने घटना के स्थान या इस तथ्य पर विवाद नहीं किया है कि मृतक की मृत्यु एक बंदूक की गोली की चोट से हुई थी। इसके विपरीत, अभियोजन पक्ष के गवाहों की जिरह में दिए गए सुझावों और बचाव पक्ष के गवाहों के बयानों में स्वीकार किया गया कि मृतक को गोली लगने से मौके पर ही गिर गया था। जो बचाव पक्ष ने सुझाव दिया कि गोली भीड़ में से किसी ने चलाई थी, न कि अपीलकर्ता द्वारा,उस संस्करण के हिस्से को विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय द्वारा सही तरीके से खारिज कर दिया गया है। [पैरा 14) [790-एफ-एच; 791-ए-बी]

4. केवल इसलिए कि दो गवाह मृतक के संबंधित थे उन्हें अविश्वसनीय गवाह नहीं बनाता है, खासकर जब घटना के तुरंत बाद अस्पताल में पुलिस द्वारा दर्ज किए गए बयान में, संस्करण इसके सभी आवश्यक विवरणों में गवाह द्वारा अपीलकर्ता को गोली लगने के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए दिया गया था। यह सुझाव देने के लिए कुछ भी नहीं होने पर कि उक्त चार गवाहों के पास वास्तविक अपराधी को पकड़ने और अपीलकर्ता को झूठा फंसाने का कोई कारण था, नीचे की अदालतें उनके पक्ष को स्वीकार करने औरअपीलकर्ता के खिलाफ आरोप साबित हुआ अभिनिर्धारित करने में उचित थी।

[पैरा 14] [791-बी-डी]

5. . इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राथमिकी के प्रेषण में कुछ देरी हुई है लेकिन वह स्वतः अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं है। यह काफी अच्छी तरह से तय है कि देरी क्षेत्राधिकार मजिस्ट्रेट को प्राथमिकी की एक प्रति भेजने में मामले को संदिग्ध नहीं बनाता है। महत्वपूर्ण यह है कि क्या इसके लिए कोई स्पष्टीकरण है और, यदि हां, तो यह स्पष्टीकरण कितना युक्तिसंगत है। यह कहने के लिए पर्याप्त है कि देरी से एक निर्दोष व्यक्ति झूठेआरोपित हुए हैं या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करेगा और इसे निर्धारित किया जाना चाहिए प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के संदर्भ में ।

इस संबंध में कठोर और निश्चित नियम निर्धारित नहीं किया जा सकता है। वर्तमान मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण को नीचे की अदालतों द्वारा सही ढंग से स्वीकार किया गया है। [पैरा 15] [791-ई-एच; 792-ए]

6. जहां तक इस विवाद का संबंध है कि कुछ चश्मदीद गवाहों के बयान को देर से दर्ज किया गया, इस पहलू को भी मामले के तथ्यों और परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए। देरी ने

अभियोजन पक्ष की विश्वसनीयता को प्रभावित किया है या नहीं, यह एक मामला है जिस पर कोई कठोर नियम (स्ट्रेट-जैकेट फॉर्मूला) विकसित नहीं किया जा सकता है और न ही कोई सार्वभौमिक अनुप्रयोग के लिए निर्धारित सामान्य नियम है। नीचे की अदालतों ने इस पहलू की सही सराहना की है और इस तर्क को खारिज कर दिया है कि कुछ गवाहों के बयान मामले के लिए घातक थे। यह विशेष रूप से तब होता है जब अभियोजन पक्ष का संस्करण,पहले सूचक द्वारा दिए गए बयान के आधार पर घटना की तारीख को ही ज्ञात किया गया था। पहले सूचक ने उक्त बयान में मृतक को लगी गोली की चोट के लिए अपीलकर्ता को जिम्मेदार ठहराया था। अन्य चस्मदीद गवाहों के बयानों को अभिलिखिल करने में विलम्ब,जिनमें से दो मृतक के भाई थे, इसलिए अपीलकर्ता को झूठा फंसाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया था। [पैरा 16] [792-8-ई]

7. इसके संबंध में, यह प्रस्तुत करना कि मृतक को चोट लगी है जब अपीलकर्ता निजी बचाव के अधिकार का प्रयोग कर रहा था, यह सुझाव देने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि मृतक ने किसी भी स्तर पर अपीलकर्ता पर हमला किया था या अन्यथा उसे कोई चोट पहुंचाई थी ताकि बचाव में उसे गोली लगने का औचित्य साबित किया जा सके। मुकदमे में विचारण में परीछित गवाहों के बयान सुसंगत हैं कि मृतक द्वारा अपीलकर्ता के पैर को रौंदने के कारण गर्म शब्दों और गाली-गलौज के प्रारंभिक आदान-प्रदान के बाद , अपीलकर्ता ने जगह छोड़ दी और कुछ देर बाद हाथ में अपनी बंदूक के साथ फिर से प्रकट हुआ। गवाहों के बयानों से यह भी प्रतीत होता है कि अपीलकर्ता ने बिना किसी उकसावे के मृतक के भाई को बंदूक की नली से धक्का दिया और अपीलकर्ता को गोली मार दी। इसलिए, यह समझना मुश्किल है कि इस तरह के कार्य को आत्मरक्षा के रूप में कैसे वर्णित किया जा सकता है। विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय भी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मृतक सशस्त्र नहीं था और न ही उसके द्वारा अपीलकर्ता के जीवन पर कोई प्रयास किया गया था। इसलिए, निजी बचाव की दलील विफल हो जाती है और इसे खारिज कर दिया जाता है। [पैरा 17] [792-एफ-एच; 793-ए-बी]

आपराधिक अपीलीय क्षेत्राधिकार: आपराधिक अपील संख्या 2093/2008

आपराधिक अपील संख्या 09/1996 मे जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय जम्मू के दिनांक 27-9-2007 के निर्णय और आदेश से।

अपीलकर्ता के लिए जे.सी. गुप्ता, तुषार बख्शी, सुनीता शर्मा और नरेश बख्शी।
उत्तरदाता के लिए अनीस सुहरवर्दी, शमामा अनीस, एस. मेहदी इमाम, तबेज़ जीअहमद, परवेज डबास और वादी डी. कसाना

न्यायालय का निर्णय **माननीय न्यायमूर्ति टी.एस. ठाकुर** द्वारा दिया गया,

1. विशेष अनुमति द्वारा यह अपील जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय द्वारा आपराधिक अपील संख्या 9/1996 में पारित आदेश और पुष्टिकरण संख्या 21/1996 से उत्पन्न है, जिसके तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि और सजा धारा 302 आरपीसी के तहत दंडनीय अपराध के लिए बरकरार रखा गया है और अपीलकर्ता द्वारा दायर अपील को खारिज कर दिया गया है।

2. संक्षेप में कहा गया है,अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि 13 अप्रैल 1992 को, मृतक श्री कोला राम अपने भाइयों, श्री बलवंत राज और तीरथ राम के साथ अपीलकर्ता और एक बड़ी संख्या में ग्राम नगरी पैरोल तहसील और जिला कठुआ से संबंधित अन्य लोग, नगरी से कुछ किलोमीटर की दूरी पर एक गांव अरवान में बैसाखी मेला से जश्न मनाने के बाद घर लौट रहे थे ऐसा प्रतीत होता है कि गांव के मेले में जाने वाले लोग एक छोटा जुलूस बना रहे थे और ढोल की थाप पर वापस में नाच रहे थे। अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि जब प्रतिभागी एक चावल मिल के पास पहुंचे, जो श्री धतमपाल के स्वामित्व में था, तो मृतक, कोला राम जो उल्लास मनाने वालों में भी एक था, आरोपी-अपीलकर्ता नरिंदर कुमार के पैर को कुचल दिया। इससे मृतक और अपीलकर्ता के बीच तीखी बातों और गाली-गलौज का आदान-प्रदान हुआ। पार्टी के अन्य सदस्यों ने गुस्से को शांत करने के लिए हस्तक्षेप किया लेकिन अपीलकर्ता जगह से चला गया गुस्से में केवल थोड़ी देर बाद हाथ में12 बोर के बन्दूक साथ लौटने के लिए। तब तक नृत्य मंडली नगरी पैरोल में विजय कुमार की दुकान के पास एक जगह पहुंच चुकी थी। अपीलकर्ता पर आरोप है कि उसने कोला राम के भाई को अपनी बंदूक की बैरल से एक तरफ धकेल दिया, मृतक पर करीब से गोली चलाई और हथियार लेकर मौके से भाग गया। मृतक बन्दूक की गोली की चोट से जमीन पर गिर गया और शीघ्रता से कथुआ अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया |

3. अस्पताल से चिकित्सा विधिक वाद के आने की सुचना प्राप्त होने पर,श्री दरबारी लाल शर्मा सहायक उपनिरीक्षक हरकत में आए और अन्य पुलिस कर्मियों के साथ अस्पताल पहुंचे, लेकिन उन्हें बताया गया कि मृतक की मृत्यु हो चुकी है। सहायक उपनिरीक्षक ने पीडब्लू बलवंत राज का बयान दर्ज किया,

जिसे अपराध के घटित होने के संबंध में प्रथिमिकी के रूप में लिया गया, जिससे पूरे प्रकरण का अनुसंधान शुरू किया गया । अंततः अपीलकर्ता के खिलाफ मजिस्ट्रेट के समक्ष एक चालान दायर किया गया, जिसने उसे धारा 302/323 आरपीसी और शस्त्र अधिनियम की धारा 3 सहपठित धारा 25 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए मुकदमा चलाने के लिए सत्र न्यायालय में सुपुर्द किया | सत्र अदालत के समक्ष आरोपी ने आरोपों के लिए खुद को दोषी नहीं ठहराया और विचारण का दावा किया। तदनुसार मुकदमे का विचारण किया गया, जिसमें अभियोजन पक्ष ने पीडब्लू बलवंत राज, खजान चंद, बाबू राम, तीरथ राम और जिया लाल सहित 20 गवाहों का परीक्षण कराया जिन्होंने अभियोजन पक्ष के अनुसार, इस घटना को देखा था। अभियोजन पक्ष द्वारा जिन अन्य लोगों का परीक्षण कराया गया उनमें डॉ. के.पी. सिंह भी शामिल थे, जिन्होंने मृतक का पोस्टमार्टम किया। जेएल फोतेदार, फोरेंसिक विशेषज्ञ और अनुसंधान करने वाले पुलिस अधिकारी। अपने बचाव में अपीलकर्ता ने गवाह के रूप में डीडब्ल्यू अशोक कुमार, रवींद्र कुमार और अजय शर्मा आलिया बिलू और डॉ. दलजीत सिंह का परीक्षण कराया।

4. अपने सामने पेश किए गए सबूतों की सराहना करने के बाद विचारण न्यायालय ने यह माना कि अभियोजन ने अपीलकर्ता के खिलाफ संदेह की किसी भी छाया से परे धारा 302 आरपीसी के तहत दंडनीय अपराध की स्थापना की थी| हालांकि, न्यायालय को शस्त्र अधिनियम की धारा 3 के साथ पठित धारा 25 और आरपीसी की धारा 323 के तहत दंडनीय अपराध के संबंध में आरोप का समर्थन करने के लिए कोई सबूत नहीं मिला। तदनुसार अपीलकर्ता को उन मामलों में बरी कर दिया गया था। एक अलग आदेश द्वारा अपीलकर्ता को आजीवन कारावास और 5,000/- रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई थी, जो उच्च न्यायालय द्वारा पुष्टि के अधीन था।

5. उसकी दोषसिद्धि और सजा से व्यथित होकर, अपीलकर्ता ने आपराधिक अपील संख्या 9/1996 को प्राथमिकता दी, जिस पर सुनवाई सत्र न्यायालय से प्राप्त पुष्टिकरण संदर्भ संख्या 21/1996 के साथ की गई । इस अपील में आक्षेपित निर्णय द्वारा, उच्च न्यायालय ने अपीलकर्ता द्वारा दायर अपील को खारिज कर दिया है और उसकी दोषसिद्धि और सजा की पुष्टि की है, जैसा कि पहले ही देखा जा चुका है।

6. श्री गुप्ता, अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ वकील और उत्तरदाता - राज्य के वकील को विस्तार से सुनने के बाद हमारा मानना है कि नीचे के न्यायालयों द्वारा पारित निर्णय और आदेश में हमारे हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं है। विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने भी अपने-अपने निर्णयों में अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का आलोचनात्मक रूप से मूल्यांकन किया और सही ढंग से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अभियोजन पक्ष हत्या की कोटि का सदोष मानव बध का आरोप अपीलकर्ता के खिलाफ संदेह की किसी भी छाया से परे साबित करने में सफल रहा है । हमारे सामने सुनवाई के दौरान अभिलेख पर उपलब्ध संपूर्ण साक्ष्य अपीलकर्ता के विद्वान वकील द्वारा एक बार फिर से पढ़ा गया था, यह दिखाने के प्रयास में कि अपीलकर्ता को झूठा फंसाया गया था और अभियोजन पक्ष की कहानी में गंभीर खामियां थीं जो अपीलकर्ता को लाभ का हकदार बनाती थीं| हमें उस प्रस्तुति को स्वीकार करने में असमर्थता पर खेद है। हमारी राय है कि अभियोजन पक्ष का मामला मुकदमे में जांच किए गए पांच में से चार चश्मदीद गवाहों की गवाह के आधार पर साबित हो जाता है। पांचवें गवाह खजान चंद ने अभियोजन पक्ष के बयान का समर्थन नहीं किया और उसे मुकर घोषित कर दिया गया। विचारण न्यायलय के समक्ष बलवंतराज प्रथम सूचक का बयान दर्ज किया गया जो पीड़ित कोला राम की मौत की घटना की उत्पत्ति का ग्राफिक विवरण दिया है। यह गवाह मृतक का छोटा भाई है। उनके अनुसार, वह अपने भाइयों तीरथ राम, जिया लाल और कोला राम मृतक के साथ बैसाखी मेला देखने के लिए गांव अरवान गए थे। वापस जाते समय प्रतिभागी भांगड़ा नृत्य कर रहे थे। जब भांगड़ा पार्टी धर्मपाल की आटा चक्की के पास एक जगह पर पहुंची, तो मृतक ने अपीलकर्ता के पैर को रौंद दिया, जिससे दोनों के बीच तीखी बातों और गाली-गलौज का आदान-प्रदान हुआ। इसके बाद अपीलकर्ता भांगड़ा पार्टी से अपने घर चला गया, जबकि भांगड़ा पार्टी के शेष सदस्य अपने घरों की ओर नाचते रहे। जब वे विजय कुमार के दुकान के पास पहुंचे अपीलकर्ता बंदूक लेकर मौके पर लौट आया, गवाहों को एक तरफ धकेल दिया,और मृतक पर गोली चला दी।गोली मृतक के पेट और सीने में लगी, खून बहने लगा और जमीन पर गिर गया। अपीलकर्ता बंदूक लेकर घटना स्थल से भाग गया। मृतक को नगरी अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसे कठुआ के अस्पताल में रेफर कर दिया गया। कठुआ जाते समय मृतक ने अंतिम सांस ली। कठुआ से पुलिस अस्पताल आई और अपना बयान दर्ज किया, जो प्रदर्श पी डब्ल्यू बीआर चिन्हित है ।

7. इस गवाह से जिरह में उसे कई सुझाव दिए गए जैसे भांगड़ा पार्टी के सदस्यों ने शराब पी थी या नहीं, गवाह ने इस बात को नकार दिया था। गवाह ने आगे कहा कि दो से चार मिनटों के भीतर मृतक और अपीलकर्ता के बीच झड़प के बाद, अपीलकर्ता विजय कुमार की दुकान के सामने उस स्थान पर लौट आया था जहां इस बीच डांसिंग पार्टी पहुंची थी। विभिन्न अन्य पहलुओं पर व्यापक जिरह के बावजूद, ऐसा कुछ भी बचाव पक्ष द्वारा नहीं निकाला गया था, जो संभवतः उसकी गवाही को खण्डित कर सकता था। गवाह ने इस बात से इनकार किया कि वह और उसके भाई तकवा (तेज धार वाले हथियार) से लैस थे। इस बात को भी खारिज कर दिया गया कि मृतक और जिया लाल ने अंजू और बिल्लो को मौके पर ही पीटा था। यह सुझाव भी कि भीड़ में से कोई एक गोली चलाई थी जो मृतक को लगी थी, इस गवाह ने इनकार कर दिया था। गवाह अपने बयान पर कायम रहा कि यह अपीलकर्ता था जिसने मृतक पर गोली चलाई थी जिससे उसकी मौत हो गई।

8. पीडब्लू 4 तीरथ राम द्वारा दिया गया बयान भी एक ही प्रभाव के लिए है। इस गवाह ने पीडब्ल्यू बलवंत राज की तरह बयान दिया है घटनाओं का क्रम जिसके परिणामस्वरूप मृतक की मौत की घटना हुई।इस गवाह के अनुसार, जब भांगड़ा पार्टी विजय कुमार की दुकान के पास पहुंची, तो अपीलकर्ता बंदूक लेकर आया, बलवंत राज मृतक के छोटे भाई को बंदूक की बैरल से एक तरफ धकेल दिया मृतक पर बंदूक तान दी और उस पर गोली चला दी, जिसके परिणामस्वरूप मृतक जमीन पर गिर गया।उसे नगरी अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसे कठुआ अस्पताल रेफर कर दिया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया।इस गवाह का भी जिरह व्यापक रहा है लेकिन प्रतिरक्षा द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं निकाला जा सका है जो गवाह की विश्वसनीयता या अभियोजन के संस्करण की सत्यता को प्रभावित करता हो ।

9. यह हमें बाबू राम के बयान पर लाता है, जो तीसरे चश्मदीद गवाह थे, जिनकी अभियोजन पक्ष ने अपने मामले के समर्थन में जांच की थी। यह गवाह किसी भी तरह से मृतक या उसके परिवार से संबंधित नहीं है

और, इसलिए, किसी भी तरह से पक्षपातपूर्ण के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता है । इस गवाह ने भी बलवंत राज द्वारा दिए बयान जैसा बताया उस घटना की उत्पत्ति के बारे में जो मृतक की मौत का कारण बना। इस गवाह की जिरह अन्य दो चश्मदीद गवाहों की तरह व्यापक हुई है लेकिन बचाव पक्ष के लिए किसी भी आलोचना के योग्य कुछ भी नहीं है उनकी विश्वसनीयता या उनके संस्करण की सत्यता के संबंध में। इस गवाह ने इस सुझाव से भी इनकार किया है कि मृतक किसी हथियार से लैस था या उसने अंजू या बिल्लो को घायल किया था या भीड़ से मृतक पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने गोली चलाई थी। गवाह दृढ़ था कि यह था, आरोपी जिसने मृतक पर गोली चलाई थी।

10. इसी प्रभाव का जिया लाल, पीडब्ल्यू का बयान है, जिसने गवाही दी है कि घटना के परिणामस्वरूप, मृतक को अपीलकर्ता के हाथों बंदूक की गोली लगी थी। जिरह में उनके संस्करण को बदनाम करने के लिए कुछ भी नहीं है।

11. इन सभी चश्मदीद गवाहों द्वारा दिए गए सुसंगत संस्करण के आलोक में

, नीचे के दोनों न्यायालयों ने यह मानने में उचित ठहराया कि अभियोजन पक्ष ने संदेह की छाया से परे आरोपी अपीलकर्ता का अपराध साबित किया था विशेष रूप से जब वहाँ अपीलकर्ता और गवाहों या उनके संबंधित परिवारों के बीच कोई पूर्व शत्रुता नहीं थी यहाँ तक की झूठे फ़साने की संभावना का सुझाव देने के लिए ।

12. इस स्तर पर दो अन्य पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पहला यह है कि ऊपर उल्लिखित गवाहों के प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य की पुष्टि मामले में प्रस्तुत किए गए चिकित्सा साक्ष्य से पूरी तरह से हो जाती है । सरकारी मेडिकल कॉलेज, जम्मू के रजिस्ट्रार डॉ. केपी सिंह ने पोस्टमार्टम किया और गोली लगने की चोट को मौत का कारण बताया गवाह ने इस प्रकार बताया: “छाती की हड्डी के निचे वाले हिस्से में दाहिनी ओर मध्य रेखा से 3 सेंटी मीटर दूरी पर गोली लगने का घाव पाया गया। घाव गोल आकार का था, जिसके किनारे फाटे हुए और बाहर की ओर मुड़े हुए थे। घाव के चारो ओर लगभग 1 सेंटी मीटर

क्षेत्र में त्वचा जली हुयी थी तथा उसके आसपास काले कालिख जैसे निशान मौजूद थे। कोई निकास घाव नहीं मिला।पेट खोलने पर पेरीटोनियम (उदरावरण) अनियमित रूप से फटा हुआ पाया गया, जो गोली के प्रवेश घाव के लगभग 2 सेंटी मीटर निचे था।यकृत में कई स्थानों पर फटाव पाया गया । पित्ताशय भी फटा हुआ था और उसमे से छर्रे निकाले गये। दाहिनी किडनी के उपरी भाग में भी फटाव था और वहा से भी छर्रे मिले। पेट के उपरी भाग (फंड्स) में चार छेद पाए गये और वहा से भी छर्रे निकाले गये।”

13. राजिंदर सिंह जामवाल, सहायक वैज्ञानिक का बयान ने साबित कर दिया कि जांच के लिए फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में भेजी गई 12 बोर एसबीबीएल बंदूक नंबर 5080, सामान्य कार्यशील स्थिति में थी और प्रयोगशाला में इसकी प्राप्ति से पहले ही उससे गोली चली थी और एफ/174/92 चिह्नित कारतूस खोल प्रश्नगत बंदूक से गोली चली थी। गवाह आगे बयान दिया कि मृतक के कपड़ों पर मौजूद संदिग्ध छेद बंदूक की गोली के छेद थे। अभियोजन पक्ष ने सबूत दिए कि विचाराधीन हथियार अपीलकर्ता के पिता के नाम पर लाइसेंस प्राप्त था।

14. दूसरा पहलू जो समान रूप से महत्वपूर्ण है वह यह है कि बचाव पक्ष ने घटना के स्थान या इस तथ्य पर विवाद नहीं किया है कि मृतक की मृत्यु बंदूक की गोली की चोट के कारण हुई थी। इसके विपरीत, अभियोजन पक्ष के गवाहों की जिरह में दिए गए सुझावों और बचाव पक्ष के गवाहों के बयानों ने स्वीकार किया कि मृतक उसे मिली बंदूक की गोली की चोट के कारण जगह पर गिरा था । जो कुछ भी विवादित था वह यह था कि क्या अपीलकर्ता चोट का कारक था। महत्वपूर्ण बात यह है कि अभियोजन पक्ष की कहानी के आधार को बनाने वाले आवश्यक तथ्य ये हैं कि भांगड़ा पार्टी बैशाखी मेला के सम्बन्ध में आरवान का दौरा किया था, कि वे आरवन से नगरी पैरोल लौट रहे थे कि जब पार्टी विजय कुमार की एक दुकान के पास एक जगह पर पहुंची तो एक बंदूक की गोली ने मृतक को मारा, जिसके कारण उसकी मौत हो गई यह विवाद में नहीं है।

बचाव पक्ष ने जो सुझाव दिया वह यह था कि बंदूक की गोली भीड़ में से किसी ने चलाई थी, न कि अपीलकर्ता द्वारा संस्करण के इस हिस्से को विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय द्वारा ठुकरा दिया गया है और हमारी राय में, ठीक ही है। यह सच है कि बाबू राम और तीरथ राम मृतक के भाई हैं केवल इसलिए है कि वे मृतक से संबंधित थे, उन्हें अविश्वसनीय गवाह नहीं बनाता है, खासकर जब कठुआ में पुलिस द्वारा घटना के बाद तुरंत अस्पताल में बयान दर्ज किए गए | गवाह द्वारा अपने संस्करण में सभी आवश्यक विवरण दिया गया था, जिसमें अपीलकर्ता को बंदूक की गोली के लिए उत्तरदायी ठहराया गया है। ऐसे किसी भी सुझाव दिए जाने के अभाव में कि बलवंत राज, बाबू राम, तीरथ राम और जिया लाल के पास असली अपराधी को छिपाने और अपीलकर्ता को झूठा फंसाने का कोई कारण था, नीचे के न्यायालयों ने उनके संस्करण को स्वीकार करने और अपीलकर्ता के खिलाफ आरोप को साबित करने में उचित ठहराया।

15. श्री गुप्ता ने यह तर्क देने का एक साहसिक प्रयास किया कि अभियोजन पक्ष द्वारा प्राथमिकी की एक प्रति इलाका मजिस्ट्रेट को भेजने में देरी के कारण अभियोजन पक्ष के मामले की सत्यता के बारे में गंभीर संदेह था। 13 अप्रैल, 1992 को प्राथमिकी दर्ज की गई थी जबकि मजिस्ट्रेट को इसकी एक प्रति 15 अप्रैल, 1992 को प्रात: 11 बजे प्राप्त हुई थी। इस अनुसार विद्वान वकील के लिए, अभियोजन पक्ष के मामले की सत्यता पर बादल छा गए। इसी तरह के तर्क को बचाव पक्ष द्वारा नीचे के न्यायालयों के समक्ष आग्रह किया गया था जिसे निरस्त कर दिया गया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राथमिकी की एक प्रति भेजने में वहाँ कुछ देरी हुई है , लेकिन यह अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं है। यह काफी अच्छी तरह से स्थापित है कि क्षेत्राधिकार मजिस्ट्रेट को प्राथमिकी की एक प्रति भेजने में देरी अपने आप में मामला संदिग्ध नहीं बनाता है। महत्वपूर्ण यह है कि क्या कोई देरी के लिए स्पष्टीकरण है और यदि हां, तो यह स्पष्टीकरण कितना विश्वसनीय है । यह कहने के लिए पर्याप्त है कि देरी हुई है से एक निर्दोष व्यक्ति झूठे फसाया जा रहा है या नहीं निर्भर करेगा और प्रत्येक मामले की तथ्यों और परिस्थितियाँ के संदर्भ में निर्धारित किया जाना चाहिए । इसमें कोई कठोर नियम निर्धारित नहीं हो सकता | वर्तमान मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण को नीचे के न्यायालयों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। हमें अलग दृष्टिकोण अपनाने का कोई कारण नहीं दिखता।

16. श्री गुप्ता द्वारा यह भी तर्क दिया गया था कि कुछ चश्मदीद गवाहों का बयान देर से दर्ज किया गया। इस पहलू को भी मामले के तथ्यों और परिस्थितियाँ की पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए । देरी ने अभियोजन पक्ष की विश्वसनीयता को प्रभावित किया है या नहीं, यह एक ऐसा मामला है जिस पर कोई कठोर नियम (स्ट्रेट-जैकेट फॉर्मूला) विकसित नहीं किया जा सकता है और न ही सार्वभौमिक अनुप्रयोग के लिए कोई सामान्य नियम निर्धारित किया जा सकता है। नीचे के न्यायालयों ने, हमारी राय में,इस पहलू की सही ढंग से सराहना की और इस तर्क को खारिज कर दिया कि कुछ गवाहों के बयान दर्ज करने में देरी मामले के लिए घातक थी। यह विशेष रूप से तब है जब बलवंत राज द्वारा दिए गए बयान के आधार पर अभियोजन पक्ष के संस्करण के बारे में घटना की तारीख को ही पता चल गया था। पीडब्ल्यू बलवंत राज ने उक्त बयान में मृतक को लगी गोली की चोट के लिए अपीलकर्ता को जिम्मेदार ठहराया था। इसलिए, दूसरे चश्मदीद गवाह, जिनमें से दो मृतक के भाई थे, के बयान दर्ज करने में देरी का उपयोग अपीलकर्ता को झूठा फंसाने के लिए नहीं किया गया था।

17. श्री गुप्ता द्वारा यह तर्क देने का एक कमजोर प्रयास किया गया था कि यहां तक कि अगर अपीलकर्ता द्वारा मृतक पर गोली चलाने के लिए साबित हो जाता है, तो इस बात की संभावना थी कि ऐसी कोई बंदूक की गोली की चोट निजी बचाव में उसके द्वारा हुई थी। श्री गुप्ता ने तर्क दिया कि मामले में दिखाई देने वाली परिस्थितियां संभाव्य बनाती है कि मृतक को लगी चोट अपीलकर्ता के निजी बचाव के अधिकार का प्रयोग करने के कारण हुई थी। हमें उस निवेदन को अस्वीकार करने में भी कोई संकोच नहीं है। हमारी राय में, यह तर्क पूरी तरह से निराशा में दिया गया है। हम ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि रिकॉर्ड पर ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे यह पता चले कि मृत क ने किसी भी स्तर पर अपीलकर्ता पर हमला किया था या अन्यथा उसे कोई चोट पहुंचाई जिसके बचाव में उस पर बंदूक की गोली लगने को उचित ठहराया जाये । विचारण में जांचे गए गवाहों के बयान सुसंगत हैं कि शुरुआती गर्म शब्दों के आदान-प्रदान और गाली-गलौज के बाद मृतक द्वारा अपीलकर्ता के पैर को रौंदने के कारण, अपीलकर्ता जगह छोड़ दी और कुछ समय बाद हाथ में बंदूक के साथ फिर से दिखाई दिया| गवाहों के बयानों से यह भी प्रतीत होता है कि अपीलकर्ता ने बिना किसी उकसावे के मृतक के भाई को बंदूक की नली से धक्का दिया था और अपीलकर्ता को गोली मार दी थी। इसलिए, यह समझना मुश्किल है कि इस तरह के कार्य को आत्मरक्षा में कैसे वर्णित किया जा सकता है। विचारण न्यायालय के साथ उच्च न्यायालय भी इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि मृतक सशस्त्र नहीं था और न ही उसके द्वारा अपीलकर्ता के जीवन पर कोई प्रयास किया गया था। इसलिए, निजी बचाव की दलील विफल हो जाती है और इसे खारिज कर दिया जाता है।

18. उपरोक्त परिस्थितियों की समग्रता में, हम उच्च न्यायालय के निर्णय में हस्तक्षेप करने का कारण नहीं देखते हैं। अपील असफल हो जाती है और तदनुसार उसे खारिज कर दिया जाता है।

बी.बी.बी.

अपील खारिज कर दी गई।

यह अनुवाद शिव बचन यादव , पैनल अनुवादक के द्वारा किया गया।